मिर्च मिठाई

मन्तराम वत्स्य

मिर्च-मिठाई

[बाल-नाटक]

सन्तराम बत्स्य

नेशनल पब्लिशिंग, हाउस, दिल्ली-७

मूल्य	:	एक रुपया
द्वितीय संस्करण	:	१९६६
चित्रकार	:	नरेन्द्र श्रीवास्तव
प्रकाशक	:	नेशनल पब्लिशिंग हाउस, चन्द्रलोक, जवाहरनगर, दिल्ली-७
बिक्री केन्द्र	:	नई सड़क, दिल्ली-६
मुद्रक	:	पुरी प्रिंटर्स, दिल्ली-५

नाटक के पात्र

अध्यापिका

गोपाल : एक मोटा भौंदू लड़का

इन्दिरा : तेज़-तर्रार लड़की

माँ : इन्दिरा की माँ

आनन्दी, बब्बू, रतन आदि स्कूल के बच्चे

मिर्च-मिठाई

पहला अंक

[जब पर्दा उठता है तो मंच पर स्कूल का एक कमरा दिखाई देता है, जिसमें लड़के-लड़कियाँ पढ़ रहे हैं। सामने दीवार पर भारत का एक बड़ा मानचित्र टंगा है। अध्यापिका हाथ में भूगोल की एक पुस्तक लिए पढ़ाने के ढंग से खड़ी है। दो बच्चे विशेष ढंग के हैं—एक मोटा, भौंदू लड़का पीछे की बेंच पर अपने डेस्क पर झुका ऊंघता हुआ और कक्षा की सबसे आगे की बेंच पर बैठी एक तेज-तर्रार लड़की।]

अध्यापिका : गोपाल, तुम सुन रहे थे, मैंने क्या कहा ?

गोपाल (मोटा लड़का) : (डरने का अभिनय करते हुए खड़े होकर) **आँ जी हां ऽ ऽ हाँ अध्यापिका जी।**

अध्यापिका : तो बताओ, सिन्धु नदी की कौन-सी मुख्य सहायक नदियाँ हैं। पास आ जाओ, ठीक से जवाब दो।

गोपाल (मोटा लड़का) : (पास आकर घबराकर) **सिन्धु नदी की मुख्य सहायक नदियाँ नर्मदा और ताप्ती हैं।**

[कक्षा में सभी हँसने लगते हैं। अध्यापिका नाराज़-सी होकर हाथ से गोपाल के सिर को हिलाती हुई।]

अध्यापिका : अरे ढीठ लड़के ! तुम्हारा उत्तर ऐसा हो होना चाहिये।

अभी-अभी तुम बैठे-बैठे ऊँघ रहे थे। (कक्षा की तरफ देखते हुए) अजीब लड़का है यह !

एक लड़का : अध्यापिका जी, यह बहुत खाता है, इसलिए ऐसे ही ऊँघता रहता है। (कक्षा में सभी हँस पड़ते हैं।)

इन्दिरा : (वही तेज-तर्रार लड़की) अध्यापिका जी, मैंने गोपाल पर एक कविता बनाई है।

अध्यापिका : अच्छा ! कैसी है ? सुनाओ तो।

इन्दिरा : (खड़ी होकर शैतानी से मुस्कराती है। और कक्षा के सभी बच्चे इन्दिरा की ओर आँखें गड़ाकर देखते हैं।)

बहुत रोटी खाता गोपाल
तभी तो मोटा गोलमटोल

[सभी बच्चे जोर से हँसते हैं। अध्यापिका भी गोपाल की तरफ देखकर हँसने लगती है। गोपाल भौंदू जैसा खड़ा घूरता रहता है।]

अध्यापिका : ठीक है, मैं मानती हूँ कि इस कविता में सचाई है, लेकिन किसी का मजाक उड़ाना ठीक नहीं। क्यों गोपाल, तुम बहुत रोटी खाते हो ?

गोपाल : हाँ, अध्यापिका जी।

अध्यापिका : और दूसरी अच्छी चीजें भी ? खैर, हमें एक मूर्ख लड़के के साथ समय बर्बाद नहीं करना चाहिये। आज तुम खेल की घंटी के समय फिर कक्षा में ही बैठो। तुम्हें तभी शर्म आयेगी, जब तुम देखोगे कि तुम्हारे साथ के लड़के-लड़कियाँ बाहर खेल रहे हैं और तुम अकेले कक्षा में बैठे हो। अच्छा बच्चो ! गोपाल को कोई बता सकता है कि सिन्धु नदी की मुख्य सहायक नदियाँ कौन-कौन-सी हैं ? (एक साथ कई हाथ

ऊपर उठ जाते हैं।) **बहुत अच्छा, इन्दिरा तुम बोलो।**

इन्दिरा : झेलहम, चिनाब, रावी, व्यास और सतलुज।

अध्यापिका : ठीक है।

[घंटी बजती है।]

प्यारे बच्चो ! घंटी बज गई। अब हमें अपना काम रोक देना चाहिये। और गोपाल, खेल की घंटी के बाद में तुम से सिन्धु नदी की मुख्य सहायक नदियों के नाम सुनूंगी। तुम अपनी भूगोल की पुस्तक के एक सौ अठारहवें पन्ने से ये नाम याद कर लो। सुन रहे हो न ?

गोपाल (झेंपते हुए) **हाँ अध्यापिका जी !**

अध्यापिका : गोपाल को छोड़कर सभी बच्चे खड़े हो जायें।

[बच्चे लाइन में बाहर निकल रहे हैं। इन्दिरा कनखियों से अध्यापिका को बाहर की ओर जाते हुए देखकर गोपाल के पास आते-आते अपनी कविता दुहराती है :

बहुत रोटी खाता गोपाल
तभी तो मोटा गोलमटोल

[गोपाल गुस्से से देखते हुए उसे मारने को हाथ उठाता है। और इन्दिरा मुस्कराती हुई भाग जाती है।]

[अकेला गोपाल कुछ देर तक चुपचाप बैठा रहता है। फिर अनमना-सा किताब खोले पढ़ने लगता है, कुछ देर बाद सावधानी से चारों तरफ देखता है, जैसे वह देख रहा हो कि आस-पास के दरवाज़ों और खिड़कियों से कोई झाँक तो नहीं रहा है। फिर एकाएक उसके बेवकूफी भरे चेहरे पर चालाकी की मुसकान खेल जाती है। वह अपने से आगे वाले डेस्क से हाथ फैलाकर एक खाने का डिब्बा खींच लेता है और उसे

खोल कर देखता है—उसमें चपातियां भरी हैं। उसकी ललचाई आँखें चमक उठती हैं और वह चपाती का एक टुकड़ा मुँह में रख लेता है। फिर चपातो के डिब्बे को जहाँ से उठाता है, वहीं रख देता है और चोरी से एक डेस्क से दूसरे डेस्क पर रेंगने लगता है, जैसे कि वह देख रहा हो कि सबसे अच्छा खाना किसके डिब्बे में है, वह यह देख रहा है कि कढ़ी, चावल, रोटी, मिठाई कहाँ मिलेगी। इतने में खिड़की के पीछे से एक सिर धीरे-धीरे ऊपर को उठता दीखता है। यह इन्दिरा है जो गोपाल को इस तरह चोरी करते देख रही है। अचरज और गुस्से से वह आँखें फाड़कर देखती है कि गोपाल ने उसका डिब्बा खोल रखा है और रसदार जलेबियाँ चटाचट साफ करता जा रहा है। अभी उसका मुँह तथा हाथ की उंगलियाँ रस से सनी हुई हैं कि घंटी बज जाती है। इन्दिरा खिड़की पर से धीरे-धीरे अपना सिर छिपा लेती है। गोपाल झट से अपने डेस्क के पास चला जाता है और भोलाभाला बनकर अपनी किताब के पन्ने पर नज़र गड़ा देता है।]

दूसरा अंक

[रसोई का कमरा। एक अधेड़ उम्र की औरत चूल्हे के पास बैठी मिठाइयां बनाती हुई। जब-तब कढ़ाई में पोनी चलाती हैं और कभी-कभी झुककर देखती है। फिर धीरे से निकाल-निकालकर एक बरतन में रखती जाती है। बीच-बीच में धीमे-धीमे कोई गीत गुनगुना रही है। एकाएक बाहर की तरफ देखती है और इन्दिरा मुस्कराती हुई कमरे में घुसती है।]

माँ : (प्यार से उसे चूमते हुए) **बेटी इन्दिरा, आज ठीक से स्कूल में रही ?**

इन्दिरा : (फर्श पर किताबों का बस्ता पटकते हुए) हाँ माँ, आज बड़ी मजेदार बात हुई। (माता से लिपटकर खुशी से खिल-खिलाती है।)

माँ : अच्छा यह बताओ, मैंने जो जलेबियाँ दी थीं, कैसी लगीं ?

इन्दिरा : मुझे क्या मालूम ? मैंने तो देखीं भी नहीं !

माँ : तुमने देखीं भी नहीं ! फिर मेरे मिठाई बनाने का फायदा ही क्या ? (कड़ाई की तरफ दिखाते हुए) देखो, ये तेरे लिए ही कल ले जाने को बना रही हूँ।

इन्दिरा : मैं सब कुछ बताऊँगी माँ। मुझे तुम्हारी मिठाई बड़ी अच्छी लगती है, तुम्हें मालूम है ? बड़ी अच्छी लगती है। (वह दौड़-कर एक मिठाई उठा लेती है।) मैं खा जाऊँ माँ, फिर आज जो जलेबियाँ नहीं खा सकी, उनकी कसर पूरी हो जाएगी।

[माँ उसे मिठाई खा लेने देती है। और इन्दिरा खुश होकर मिठाई मुँह में रखकर हाथ साफ करने लगती है।]

इन्दिरा : अच्छा माँ, तुम याद करो कि मैं कई बार बता चुकी हूँ कि मुझे शक था कि कोई न कोई मेरे डिब्बे में से खाना चुरा-कर खा जाता है।

माँ : हाँ री, याद है। एक दिन दी तो थीं मैंने तुम्हें तीन चपातियां और तुम घर आकर मुझ पर नाराज होने लगीं कि डिब्बे में सिर्फ एक चपाती क्यों रखी ?

इन्दिरा : बिल्कुल ठीक माँ। लेकिन माँ, उस दिन के लिये मुझे माफ कर दो क्योंकि उस दिन भूख ही ऐसी लगी थी कि क्या कहूँ। लेकिन आज मैंने उस जलेबी-चोर को पकड़ लिया है, और मैं समझती हूँ कि पहले भी वही चुराता था।

माँ : (अचरज में) कौन ?

इन्दिरा : वही है न मोटा भौंदू-सा लड़का। गोपाल नाम है। तुम जानती हो वह इ—त—ना मोटा है कि हम लोग तो उसे चिढ़ाते रहते हैं :

बहुत रोटी खाता गोपाल
तभी तो मोटा गोलमटोल

माँ : (हँसती हुई) अरी, कैसे उसे चुराते देखा ?

इन्दिरा : (खुश होकर) मैं बिल्कुल सच कह रही हूँ। मैंने खुद अपनी आँखों से देखा। करीब-करीब रोज उसे अपना सबक खेल की घंटी के समय याद करना पड़ता है। आज सुबह भी सिन्धु नदी की मुख्य सहायक नदियों के नाम नहीं बता सका। उसने उत्तर दिया : "नर्मदा नदी और ताप्ती"। सभी हँसने लगे; मुझे भी हँसी आ गई। लेकिन फिर भी समझ गई कि इस तरह मूर्ख बनना उसका एक बहाना था।

माँ : अच्छा, तब ?

इन्दिरा : तब क्या, जब खेल की घंटी के समय हम लोग बाहर जाने लगे तो मैं धीरे से छिपकर खिड़की से कक्षा में झाँकने लगी। देखा, वह मोटा लड़का एक के बाद दूसरे डिब्बे खोलते हुए मन-मर्जी की चीजें उड़ाता जा रहा है।

माँ : तुमने उसी समय कुछ कहा नहीं? और तुम्हारी जलेबियाँ ?

इन्दिरा : ओह ! कैसे भुक्खड़ की तरह खा रहा था ! कैसे उसके ओंठ लपलपाते थे और किस तरह वह उंगलियाँ चाटता जा रहा था, माँ तुम्हारे देखने ही लायक था वह सब।

[इन्दिरा उसकी नकल करती है और माँ हँसने लगती है।]

माँ : कैसा लालची, चोर लड़का है। तुम्हें अध्यापिका जी को बता देना चाहिये था न ?

इन्दिरा : मैंने बता दिया माँ।

माँ : तो क्या कहा उन्होंने ?

इन्दिरा : ओह ! पहले तो गुस्से में आकर उदास-सी हो गईं, कि उनकी कक्षा में एक ऐसा चोर लड़का है, फिर एकाएक हँसने लगीं और कहा कि मैंने एक बड़ा अच्छा तरीका निकाला है चोर पकड़ने का।

माँ : वह क्या ?

इन्दिरा : अध्यापिका जी ने यह चोरी की बात, तुम्हें छोड़कर और किसी को भी बताने के लिए मना कर दिया है। हम लोगों ने उसे पकड़ने का एक तरीका सोचा है। माँ, तुम उसमें जरूर मदद करोगी न ?

माँ : क्या है वह तरीका ?

इन्दिरा : अध्यापिका जी ने कहा है कि कल की मिठाई में माँ से खूब ज्यादा मिर्च भरवा लाना। अध्यापिका जी उसे फिर खेल की घंटी के समय कक्षा में ही बैठा देंगी। और तब मैं और वह दोनों छिपकर देखेंगी कि वह क्या करता है। जब वह मेरे डिब्बे के पास आएगा—ओह बड़ा मजा आएगा। ओह, माँ ! तुम ऐसा जरूर कर दो।

माँ : लो, अभी लो।

इन्दिरा : (खुशी से नाचते हुए) आ-हा हा-हा ! बड़ा मजा आएगा !

माँ : पहले मुझे अच्छी तरह समझा दो, फिर मैं वैसे ही तैयार कर दूंगी।

[इन्दिरा के कहने के अनुसार माँ करती जाती है।

दूसरे कमरे से मिर्च का डिब्बा लाती है। मिठाइयों के बीच खूब मिर्च भर कर जैसी की तैसी ही फिर बन्द कर देती है। इन्दिरा खुशी के मारे हँस रही है, उछल रही है।]

माँ : **देखो इन्दिरा, इसमें उस भुक्खड़ गोपाल के लिए अच्छा इलाज रख दिया गया है। बस, इसे अभी अपने डिब्बे में रख छोड़ो। कहीं ऐसा न हो कि बाकी मिठाई में गोपाल के लिए खास ढंग से बनी मिठाई मिल जाए। तुम गोपाल के लिए बनी यह खास मिठाई तो खाना नहीं चाहती हो न ? या चाहती हो ?**

इन्दिरा : **मैं सोचते भी डरती हूँ।** (वह मिठाई को संभाल कर डिब्बे में रखती है और डिब्बे को अलमारी में बन्द कर देती है।) **अब श्री गोपाल जी, हम देखेंगे कि कल क्या होता है।**

तीसरा अंक

[वही स्कूल का कमरा। बच्चों के सामने अध्यापिका खड़ी है, लेकिन आज उसके हाथ में इतिहास की किताब है।]

अध्यापिका : (रौब से बोलते हुए) गोपाल !

गोपाल : (घबराकर) जी हाँ, अध्यापिका जी !

अध्यापिका : मैं तुम्हें संसार के सबसे सुन्दर मकबरे की कहानी सुना चुकी हूँ। अब हमें बताओ वह किसका बनाया हुआ है ?

गोपाल : (सावधानी से) ताजमहल बादशाह जहांगीर ने अपनी ख़ूबसूरत बीवी नूरमहल की याद में बनवाया।

[कक्षा में सभी हँसने लगते हैं।]

अध्यापिका : मैं ठीक ही समझती हूँ। तुम तो बिल्कुल बेवकूफ लड़के हो। बच्चो, क्या जैसा जवाब इसने दिया है, ठीक है ? हमेशा यह ठीक उत्तर न देकर पिछली बातों को गलत ढंग से दुहराने लगता है। यह उस कहानी के बारे में बता रहा है, जो मैंने पिछले हफ्ते पढ़ाई थी। क्या किसीको ठीक-ठीक याद है ?

[उत्सुकता से कई हाथ ऊपर उठ जाते हैं।]

ठीक है, आनन्दी, क्या तुम गोपाल को सुना सकती हो ?

आनन्दी : गोपाल बताना चाह रहा था कि बादशाह जहाँगीर ने अपनी बीवी नूरमहल के लिए कश्मीर में बगीचे लगवाये थे।

अध्यापिका : ठीक है। अब बब्बू, तुम गोपाल को ताजमहल के बारे में बता सकते हो ?

बब्बू : ताजमहल बादशाह शाहजहाँ ने अपनी बीवी आरजूमंद की यादगार में बनवाया, जिसका नाम बदलकर रख दिया था – मुमताज महल।

अध्यापिका : बिल्कुल ठीक।

[घंटी बजती है।]

अच्छा, गोपाल! तुम हमेशा की तरह आज भी खेल की घंटी के समय बैठकर मुगल बादशाह के बारे में अपना पाठ याद करो। अपनी किताब के एक सौ पाँचवें पन्ने पर देखो। सुन रहे हो न?

गोपाल : जी हाँ अध्यापिका जी!

अध्यापिका : गोपाल को छोड़कर सभी खड़े हो जायें। दायें घूमो! मैदान की ओर चलो।

[इन्दिरा की आँखें चमक उठती हैं। वह अध्यापिका से आँखें मिलाकर मुस्काने लगती है। जैसे वे कोई भेद छिपा रही हों। बच्चों के साथ अध्यापिका बाहर चली जाती है। गोपाल अकेला रह जाता है। और दिनों की तरह आज फिर वह एक के बाद दूसरे डिब्बे को खोल-खोलकर देखने लगता है। इतने में खिड़की के पीछे से दो सिर धीरे-धीरे ऊपर को उठते हैं—अध्यापिका और इन्दिरा के सिर। इन्दिरा का डिब्बा खोलते ही गोपाल की आँखें खुशी से चमक उठती हैं। और मिठाई का एक बहुत बड़ा टुकड़ा वह अपने मुँह में डाल लेता है कि एकाएक वह खाँसना शुरू कर देता है। गले को हाथ से पकड़ लेता है। उसका मुँह लाल हो जाता है। इन्दिरा और अध्यापिका खिड़की से हटकर एकाएक कमरे में आ घुसती हैं।]

अध्यापिका : **अरे लालची लड़के ! चोर ! यह क्या कर रहे हो ?**

गोपाल : (गला पकड़े हुए, खाँसते हुए और ज़ोर-ज़ोर से साँस छोड़ते हुए) **पानी ! पानी ! ! अरे मैं मर गया !**

अध्यापिका : **अरे मरे कहाँ ? अभी क्या कर रहे थे ? यह क्या हो रहा था ?** (इतने में घंटी बजती है। बच्चे कक्षा में आ जाते हैं और सभी गोपाल को देखने लगते हैं जो खाँस रहा है, हाँफ रहा है। सभी यह देखकर हँसने लगते हैं।)

अध्यापिका : नहीं गोपाल ! (गोपाल कक्षा से बाहर भाग जाना चाहता है।) अभी तो कुछ हुआ ही नहीं ? लड़को ! इसे रोको। जाने न पाये। (कुछ लड़के उसे सख्ती से पकड़ लेते हैं।)

गोपाल : पानी ! पानी !! (वह खाँसता है, हाँफता है।) अरे मेरा गला !!!

अध्यापिका : इन्दिरा, जाओ एक गिलास पानी ले आओ।

[इन्दिरा दौड़कर पानी ले आती है। गोपाल गटागट पानी पी जाता है। गले को कुछ आराम पहुँचता है।] अच्छा, बच्चो, केवल यह चोर और जो पुलिस के सिपाही बनना चाहते हैं, उनको छोड़कर सभी बैठ जायें। (बच्चे अपनी-अपनी जगह पर बैठ जाते हैं।) बच्चो! गोपाल उतना बेवकूफ नहीं है, जितना कि वह बनता रहा है। यह बड़ा ही चालाक लड़का है, इसने यह सोच लिया है कि बेवकूफ बने रहना अच्छा है। तुममें से कुछ बच्चों ने कई बार शिकायत की थी कि तुम्हारे डिब्बों में से कोई खाना चुरा लेता है। यह वही चोर है। यह जान-बूझकर गलत जवाब देता है ताकि इसे खेल की घंटी के समय अन्दर बैठा दिया जाये और इस तरह से दूसरों का खाना चुराकर खाने का मौका मिल जाए। आज मैंने खुद इसे चुराकर खाते हुए देख लिया है। आज इसने इन्दिरा की मिर्च-भरी मिठाई चट कर डाली। और देखो, इसका चेहरा तो देखो।

[बच्चे उस पर हँसने लगते हैं और गोपाल हिचकियाँ ले-लेकर रोने लगता है।]

अच्छा, अब सवाल यह है कि हम इसे किस तरह की सजा दें। इसे पिछली कक्षा भेज दें या इस बारे में इसके पिता

को बता दें, या इसे स्कूल से निकाल दें, क्या राय है तुम लोगों की ?

[कुछ देर के लिए चुप्पी छा जाती है। बच्चे एक दूसरे को देखने लगते हैं और सोचने लगते हैं।]

इन्दिरा : मैं सोचती हूँ, गोपाल अपनी गलती की पूरी सजा पा चुका है। मैं समझती हूँ अब फिर कभी यह चोरी नहीं करेगा।

अध्यापिका : (चेहरे पर अचरज का भाव लाते हुए) यह सच है ? क्या इन्दिरा की बात से कोई राजी है ?

[एक साथ कई हाथ ऊपर उठ जाते हैं।]

अच्छा, शायद तुम लोगों का सोचना ही ठीक हो। मैं भी विश्वास करती हूँ कि आदमी को अपनी बुरी आदत सुधारने का एक मौका देना चाहिए। क्या तुम सभी बच्चे यह चाहते हो कि गोपाल को सुधरने का एक मौका और दिया जाए ?

[हर एक का हाथ ऊपर उठ जाता है।]

बहुत अच्छा, गोपाल ! मैं भी इन बच्चों की राय मानती हूँ। मैं जानती हूँ कि तुम हमेशा भूखे रहते हो, यही कि तुम्हारी उमर अभी हर वक्त बढ़ने की है, लेकिन तुम्हें अपनी भूख पर काबू करना चाहिये। और हमेशा दूसरों की चीज चुराने से बचना चाहिये। क्या तुम अब भी अच्छा बनने की कोशिश करोगे ?

गोपाल : (बहुत नम्रता से) जी हाँ अध्यापिका जी।

अध्यापिका : अच्छा अब तुम जाओ और हाथ-मुंह धोकर जल्दी लौट आओ। मैं तुम्हें और कुछ बताना चाहती हूँ। (गोपाल और

पुलिस के वे सिपाही भी जाते हैं।) **सुनो बच्चो,** (उनको तरफ गौर से देखते हुए) **अब हमें गोपाल की तरफ ध्यान देना चाहिये। अब कोई उसे 'मोटा' न कहे। मुझे बहुत खुशी होगी कि कोई उसके ऊपर सुन्दर-सी कविता बनाकर सुनाये। सभी कोशिश करो।** (बच्चे कुछ देर तक सोचते हैं, तभी एक हाथ ऊपर उठता है।) **हाँ रतन ?**

रतन : **हमारे प्यारे अच्छे गोपाल**
करो तुम अच्छे अच्छे काम
बहुत ना खाओ करो कुछ काम
कि मिल जावे अच्छा-सा नाम

अध्यापिका : **बहुत अच्छा रतन। वह है बड़ा चालाक लड़का, लेकिन उसकी यही बुरी आदत है कि ज्यादा से ज्यादा खाने-पीने के बारे में ही सोचता रहता है। खैर, हम उसे सुधारने के बारे में सोचें।** (सभी एक मिनट तक सोचते हैं, तब इन्दिरा हाथ उठाती है।)

इन्दिरा : **आओ प्यारे गोपू आओ !**
एक पाठ यह मत बिसराओ
विद्यालय के सभी नियम का
पालन करना भूल न जाओ
खेलो, कूदो, पढ़ो, सभी से
मिलकर सबको मित्र बनाओ...

अध्यापिका : **बस ! बस ! शाबास। बहुत अच्छी। हम सभी उसके बारे में ऐसे ही अच्छे ढंग से सोचें ! और अभी नहीं, जब वह लौटकर आये तो यह पूरी कविता सुना दी जाये।**

[अध्यापिका के सामने सभी बच्चे कविता की वे पंक्तियाँ गुनगुनाते हैं। गोपाल अन्दर आता है।]

अध्यापिका : अच्छा गोपाल, हमने तुम्हें माफी देने की सोची है ! और हमें विश्वास है अब से तुम सबसे अच्छा व्यवहार करोगे ! ठीक है?

गोपाल : (हाथ जोड़कर नम्रता से) जी हाँ अध्यापिका जी, मैं आप सब को धन्यवाद देता हूँ !

अध्यापिका : अब हम तुम्हें खुश करने के लिए एक कविता सुनाते हैं ! ध्यान से सुनो ! (कक्षा की तरफ इशारा करती है।)

सब बच्चे :

आओ प्यारे गोपू आओ !
एक पाठ यह मत बिसराओ
विद्यालय के सभी नियम का
पालन करना भूल न जाओ
खेलो, कूदो, पढ़ो, सभी से
मिलकर सबको मित्र बनाओ
सब को 'भाई-बहन' समझ कर
झगड़े के तुम पास न आओ
सबको खुश रखो खुश रह कर
अच्छी अच्छी बातें कह कर
अच्छे बच्चे बनकर ही तुम
बन सकते हो 'वीर जवाहर'
ऐसा हो हर काम कि, जग में
तुम भी अपना नाम कमाओ
आओ प्यारे गोपू आओ !

गोपाल : (हाथ जोड़कर) धन्यवाद अध्यापिका जी।

अध्यापिका : बच्चो ! एक बात और। गोपाल अपने जैसा अकेला नहीं है जो दूसरों के साथ बुरा बर्ताव करता रहा है, सभी बच्चे कभी न कभी इस तरह की गलती करते रहते हैं। इसलिए सभी यह बात याद रखें कि पाठशाला के नियमों का अच्छी तरह पालन किया जाए। इसलिये मेरी राय यह है कि इस अच्छी कविता को केवल गोपाल के नाम के साथ ही नहीं बल्कि सभी बच्चों के नाम के साथ पढ़ा जाए। सब अपनी तरफ इशारा करके ऐसे पढ़ें। (अध्यापिका उंगली से अपनी तरफ संकेत कर पढ़ने का ढंग दिखाती है और कक्षा की तरफ सिर हिलाकर पढ़ने को कहती है।)

प्यारे भाई बहनो आओ
एक पाठ यह मत बिसराओ
विद्यालय के सभी नियम का
पालन करना भूल न जाओ
खेलो, कूदो, पढ़ो, सभी से
मिलकर सबको मित्र बनाओ
सबको 'भाई-बहन समझ कर
झगड़े के तुम पास न आओ
सबको खुश रखो खुश रह कर
अच्छी-अच्छी बातें कह कर
अच्छे बच्चे बनकर ही तुम
बन सकते हो 'वीर जवाहर'

ऐसा हो हर काम कि जग में
तुम भी अपना नाम कमाओ
प्यारे भाई-बहनो आओ

[पर्दा गिरता है]